पत्र

बहुत दिनों के बाद एक पूरा विशेषांक आदि से अंत तक पढ़ा। इसलिए कि ''भीष्म विशेषांक'' बहुत अच्छा निकला है। उसका प्रत्येक लेख सटीक, सार्थक और तथ्यपरक है। भीष्म जी सही मायने में बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे, तभी वे जीवन के कठिन संघर्ष झेलकर भी इतनी सशक्त रचनाएं दे सके। चाहे वे उपन्यास हों या कहानी और नाटक। 'तमस' जैसे उपन्यास, 'चीफ की दावत' जैसी कहानियां और 'माधवी' जैसे नाटकों के प्रसंग, दृश्य और पात्र आंखों के सामने जीवंत हो जाते हैं। उनके लेखन की विशेषता है जीवंत तथ्यों का तटस्थ प्रस्तुतिकरण। वे कहीं भी उपदेशक के रूप में रचनाओं पर सवार नहीं है। तुमने उनके लिए 'अल्पोक्ति' शब्द का सही प्रयोग किया है। तुम्हारी प्रस्तावना की यह विशेषता होती है कि संबंधित विषय के मुख्य बिन्दुओं का उद्घाटन। जीवन और समाज की विसंगतियों, अमानवीय आचरणों, साम्प्रदायिकता और नारी अत्याचारों तथा राजनीति के पाखंडों आदि के चित्रण में कहीं भी दुराग्रह नहीं है। सब कुछ की अप्रियता के प्रस्तुतिकरण के बाद भी वे मानवीय आदर्शों के साथ खड़े और जुड़े दिखाई देते हैं। सच्चे साहित्यकार की यह बड़ी खूबी है। सर्वमित्रा ने सही लिखा कि ''उनकी लेखनी की सबसे बड़ी ताकत है जो इंसान और इंसानियत पर भरोसा बनाए रखने का संदेश देती है बिना किसी जोर जबरदस्ती के।'' दिए गए साक्षात्कारों में ये सब बातें भी देखी जा सकती हैं। संगठन को लेकर उनके प्रयास और चिंता उनके दायित्व पूर्ण स्वभाव के साक्षी हैं। हानूस की घड़ी बनाने वाला, माधवी नाटक में माधवी के साथ ययाति, गालब और विश्वामित्र के अमानवीय निर्लज्ज कृत्य, माधवी की विवशता, 'मय्यादास की माड़ी की रुक्मिणी के साथ किया गया छल' पढ़कर अंतरात्मा कांपने लगती है। कल्पना के बाहर है यह सब कृत्य। ऐसे अनेक प्रसंग भीष्मजी की सशक्त लेखनी श्रेष्ठ भाषा शैली और यथार्थ सोच और साहसिक प्रस्तुतिकरण के साक्षी हैं जो उन्हें उसके शताब्दियों तक जिन्दा बनाए रखेंगे। इतने शानदार, सशक्त अंक के लिए बधाई।

डॉ. गंगाप्रसाद बरसैया, ए-7, फारचून पार्क, जी-3, गुलमोहर भोपाल-39 (म.प्र.)

'अक्षर पर्व' जुलाई-215 पढ़ा। इस अंक में पाठक मंच की सार्थक गतिविधियों से अवगत होना सुखद लगा। इस संदर्भ में जनता कवि का घर पहचानने लगे, गांव-गांव में कविता, कहानी यानी साहित्य के प्रति मानसिक भूख जगे, जिनके दायित्व आयोजकों के ऊपर होता है, ये तमाम कथानक रचनात्मक और स्वस्थ मानसिकता को गढ़ने में सक्षम हैं।

इस छोटे से अंचल में भी सक्रिय पाठक मंच है, जिसकी भूमिका बिल्कुल प्रस्तावना जैसी है। इसकी कुछ रपट 'अक्षर पर्व' में भी प्रकाशित हुई है। राजेन्द्र उपाध्याय के विचार 'मानवाधिकार और प्रेमचंद' स्त्री-पुरुष संबंधों पर 'स्वछंद' भोग की मानसिकता वालों को विवाद में आत्मीय संबंध कहां दिखता है। एक स्त्री-देह पर स्वामित्व की स्वेच्छा से मिलना सर्टिफिकेट ही तो होता है।

इस अंक की जबरदस्त कहानी 'मुर्गा लड़ाई' उद्वेलित करती है। यह कहानी कथानक के शब्द सौंदर्य को बिखेरते हुए, कथ्य के बिम्बों-प्रतीकों का ऐसा अनोखा-सलोना सा विन्यास और उनकी काव्यात्मक अभिव्यक्तियों को, प्यार के संवादहीन संप्रेषण की अक्षम ऊर्जा को विस्तारता में ले जाती हैं, जहां पाठक अभिभूत होते हैं। पाठक इन दृष्टांत पर गौर कर सकते हैं, जो कथा की केन्द्रीय सोच है- 'जंगल तुम्हारे पदचाप की प्रतीक्षा कर रहा होगा निःशब्द... चुपचाप...।'

इस अंक की कविताएं एवं गज़ल अच्छी लगी। खासकर देववंश दुबे की ग़ज़ल की इन पंक्तियों ने 'लौटना है ये सोचकर उड़ना / आसमां में मकां नहीं होते।' यकीनन जमीन से जुड़े यह ख्यालात, आदमी को जमीन से जुड़कर महत्वाकांक्षा बनाने को प्रेरित करती हैं।

मंजुला उपाध्याय 'मंजुल'
सम्राट चौक, पूर्णिया-85431
मो. 9431865979

अक्षर पर्व का जुलाई अंक सामने है। ललित जी की प्रस्तावना पहली बार पढ़ी तो सटाक से निकल गई। विचार करने हेतु द्वितीय-तृतीय पाठ किया। कौंध सी उठी कि आप की बात कदाचित् समाप्त नहीं, यहीं से शुरू होती है। साहित्यकार यदि बहुरुपिया हो जाय तो जनमानस के आभ्यांतरिक भावों का विश्लेषण तो सोचा ही नहीं जा सकता। आपने कलमकारों को आईना भेंट किया है। छिनभर अपने मुखारबिन्दु का दर्शन तो करें ! अपना चेहरा किसे सुंदर नहीं लगता ! पल्लवग्राही अध्ययन तथा आत्ममुग्धता से लबरेज स्वनामधन्य व्यासों, तुलसीयों के चिंतन का समय है, यह। ईटार में आयोजित कार्यक्रम प्रायोजित न्यासियों, मठों और मठाधीशों तथा रीढ़ विहीन पहरुओं की कोरी लफ्फाजी से कोसों दूर बिना किसी को खारिज किए साहित्यिक मर्यादा के भीतर साहित्य सृजन है। इस सृजन में आप की प्रस्तावना के पश्चात् अध्याय पर अध्याय रचे जायेंगे इस विश्वास के साथ।

डा.श्यामबाबू शर्मा, शिलांग

पिछले दिनों भाई पलाश के सौजन्य से अक्षर पर्व के बहुमूल्य अंक पढ़ने को मिले। आप कितनी तन्मयता से ये दुरूह कार्य कर रहीं हैं। भीष्म साहनी पर केंद्रित सामग्री तो अनूठी है।

राकेश अचल
फ़/1,पार्क होटल,पड़ाव
ग्वालियर